विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

क्या कम वोटिंग का अर्थ लोकतंत्र में विश्वास की कमी है?

प्रश्न गम्भीर है और इसका उत्तर जटिल। साधारणत: यह कहा जा सकता है कि कम वोटिंग के अनेक कारण हैं। चुनावों में मतदान की प्रक्रिया को उसके पेटर्न को समझना भी एक कला है। मतदान संवैधानिक अधिकार है। यह आवाज प्रारम्भ ही से सुनी जा रही है कि मतदान करना अनिवार्य होना चाहिये। सन 1951-52 से प्रारम्भ होने वाले चुनावों से लेकर अभी तक यह स्पष्ट रूप से समझा जा रहा है कि चुनावों में समय ज्यादा भागीदारी गरीबों की, साधारण व्यक्तियों की है, बड़े लोग, बडे अधिकारी मतदान में भाग बहुत कम लेते हैं।

वर्तमान चुनाव में यह नारा बहुत प्रचलित है, अबकी बार मोदी सरकार, अबकी बार 400 पार। मोदी के विरोध में विपक्ष एकजुट होने का प्रयत्न कर रहा है, किन्तु सफलता उसकी पहुँच से दूर है। विपक्षी संगठन को INDIA नाम दिया गया है। वस्तुत: पूरा नाम बहुत बडा है, किन्तु INDIA का सही अर्थ क्या है किसी ने समझा नहीं है। हमारे देश का नाम भारत है। जैनियों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र के नाम भरत पर देश को भारत नाम दिया गया। वेदों में ऋषभदेव के नाम का वर्णन है। अंग्रेजों ने भारत को अपना एक उपनिवेश बनाया और इसे INDIA नाम दिया। ऑक्सफोर्ड के शब्दकोष में INDIA के नाम का अर्थ है, वह जनजाति (ट्राइव) जो अशिक्षित है, लूटपाट में लिप्त है।

चुनावों में भाग लेने वाले लोग कई श्रेणियों में वर्गीकृत किये जा सकते हैं। प्रथव चुनाव के समय सबसे बडी पार्टी कांग्रेस थी। विपक्ष कई दलों में बंटा हुआ रहा है। वर्तमान में संसद की सबसे बडी राजनीतिक पार्टी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) है। भाजपा का राज है। कांग्रेस विपक्ष की बड़ी पार्टी है। यह कहा जा रहा है कि भारत की संसद में कभी 400 सांसद कांग्रेस के थे; किन्तु आज 300 सांसद चुनावों में खडे होने वाले उम्मीदवार भी उसे नहीं मिल रहे हैं, जिन पर वह विश्वास कर सके। गठबंधन के लोग ही आपस में लड रहे हैं।

लोकसभा चुनाव 2024 सात चरणों में हो रहे हैं। प्रथम चरण के चुनाव 19 अप्रैल 2024 को हो चुके हैं। अन्तिम चरण 7 के चुनाव 01 जून 2024 को होंगे।

पहले चरण के 102 सांसदों के क्षेत्र के चुनावों में मतदान हो चुका है।

भारत में मतदान का पेटर्न उलझे हुये प्रश्न के उत्तर जैसा है। प्रारम्भ में चुनाव का पेटर्न कांग्रेस बनाम अन्य पार्टियां थीं। वर्तमान में अब यह पेटर्न भाजपा बनाम शेष अन्य पार्टियां हैं। नये भारत का जन्म राजनीति के आंगन में हुआ। जहां गणतंत्र है वहां एक दूसरे के विरूद्ध विचारधारा की पार्टी होंगी ही। जिस पार्टी की सरकार है उसके कार्यकर्ता के हित रखने वाले व्यक्ति कमिटेड मतदाता होते हैं। यह माना जाता है, ऐसे लोगों ने पार्टी के पक्ष में मतदान किया ही होगा।

प्रत्येक व्यक्ति अपेक्षा करता है कि उसके देश की सरकार, विकास के प्रति कर्त्तव्य निष्ठ रहे। अत: नये मतदाता, पार्टी इन पावर का साथ देते हैं। कुछ मतदाता समय की बयार के साथ चलते हैं। देश की महिलाओं का मत भी विकास के साथ रहता है। अनुच्छेद 370 की समाप्ति, तीन तलाक से मुक्ति ने मुस्लिम महिलाओं को मतदान के लिये प्रेरित किया है और राम मंदिर ने हिन्दू महिलाओं को मतदान की कीमत समझी है।

सन् 2024 का यह चुनाव मोदी के सबल नेतृत्व में एनडीए संग भाजपा तथा कांग्रेस संग इण्डिया के मध्य लड़ा जा रहा है। एक ओर विश्व के नेताओं के नेता पीएम मोदी ने चुनाव की बागडोर संभाल रखी है तो दूसरी ओर बिखरा हुआ ष्प्ड्रष्ट संग राहुल की कांग्रेस के बीच लड़ा जा रहा है। एक ओर देश को तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बनाने का है तो दूसरी ओर लडखडाते हुये नेतृत्व विहीन पार्टी चुनाव के मैदान में है। भारत की चारों दिशाओं में अब की बार मोदी सरकार व 400 पार के नारे बुलन्द आवाज में सुनाई दे रहे हैं तो दूसरी ओर विपक्ष को 300 सीटों पर लड़ने वाले उम्मीदवार भी नहीं मिल पा रहे हैं। बनावटी पोल के नतीजे भी चुनाव के रिजल्ट 370 के आस पास दिखा रहे हैं।

दिनांक 19.04.2024 को प्रथम चरण के चुनाव पूरे हुये और देर रात तक यह समाचार मिला कि औसत मतदान कम हुआ है। राजनैतिक गलियारों में कुछ देर के लिये सन्नाटा छा गया। विचारों का द्वन्द प्रारम्भ हो गया। दिनांक 19.04.2024 के बाद चुनाव आयोग का चुनावों का विस्तार से विशलेषण मिला। यदि हम राजस्थान की 12 संसद की सीटों के बूथ वाईज मतदान को देखेंगे तो ज्ञात होगा कि 24370 मतदान केन्द्रों में से 12001 केन्द्रों पर पूर्व चुनाव के औसत 58.28 प्रतिशत से कम वोट पडे हैं। 5717 बूथों पर तो 50 फीसदी से कम मतदान हुआ है। विशलेषण के आंकडे यह भी कह रहे हैं कि कुछ बूथों पर 90 प्रतिशत मतदान हुआ है और कुछ पर मतदान 10 प्रतिशत ही हुआ है। कुछ जगह मतदाताओं ने चुनाव का बहिष्कार किया है। राजस्थान की तरह ही अन्य राज्यों में भी मतदान में कमी आंकी गई है। 21 राज्यों में से 19 में मतदान में कमी आई है। राजस्थान में 2019 में मतदान 63.7 प्रतिशत था इसके विरूद्ध 2024 में औसत मतदान 57.6 प्रतिशत है। लक्षद्वीप में 2019 में 85.1 प्रतिशत था और 2024 में मामूली सी कमी आंकी गई है, वहां औसत 2024 में 84.1 प्रतिशत आया है। उत्तराखण्ड में 2019 में 61.5 प्रतिशत तो 2024 में 57.2 प्रतिशत पाया गया है। आन्ध्रप्रदेश, तामिलनाडु, महाराष्ट्र में मतदान में काफी कम है। इलेक्शन कमीशन इस कमी पर निकाह लगाये हुये है और इसे बूस्ट करने की योजना दूसरे चरण में करने जा रहा है। आज 26.4.2024 है, यानी दूसरे चरण का मतदान है। ऐसा मालूम हुआ है कि मतदान के समय मुख्य बाजार बंद रहेंगे।

> **भारत में मतदान का पेटर्न उलझे हुये प्रश्न के उत्तर जैसा है। प्रारम्भ में चुनाव का पेटर्न कांग्रेस बनाम अन्य पार्टियां थीं। वर्तमान में अब यह पेटर्न भाजपा बनाम शेष अन्य पार्टियां हैं। नये भारत का जन्म राजनीति के आंगन में हुआ। जहां गणतंत्र है वहां एक दूसरे के विरूद्ध विचारधारा की पार्टी होंगी ही।**

कम वोटिंग के कई कारण हैं। अलग-अलग प्रदेशों में भी ये कारण भिन्न हो सकते हैं, किन्तु इस सच को स्वीकार नहीं किया जा सकता कि कम मतदान का अर्थ है, मतदाता का लोकतंत्र में विश्वास कम होना है।

पहले चरण में यह भी देखने में आया है कि जहां भाजपा का असर है वहां मतदान कम हुआ है किन्तु जहां भाजपा का प्रभाव नगण्य है वहां मतदान बम्पर भी हुआ है।

प्रथम चरण में मतदान की कमी का कारण कुछ चुनाव विशेषज्ञ यह मानते हैं कि भाजपा यह मान बैठी थी कि उनकी जीत सुनिश्चित है, और कांग्रेस के कार्यकर्ता हार के भय से निराश हो गये थे। हार निश्चित है, फिर मतदान कराने का नाटक क्यों किया जावे? मतदान के समय कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने मतदाताओं को घर से बूथ तक लाने का प्रयत्न नहीं के बराबर किया जबकि भाजपा कार्यकर्ता भी एक सीमा तक आशावान होने से पूर्ण सजग नहीं रहे।

एक चुनाव विशेषज्ञ का विचार लेखक को सारगर्भित लगा। उनका कहना था कि कांग्रेस अपनी सन्तानों को सैट करना चाहती है, वहीं मोदी सभी लोगों की सेवा में खड़ा है।

चुनावों में एक बात मूल रूप से देखी जा रही है कि पैसे वाले व बुद्धि वाले मत देने बूथ तक नहीं जाते। मतदान में झुग्गी-झौंपडी के मतदाताओं की संख्या अधिक रहती है। अत: मतदान अनिवार्य Compulsory होना चाहिये। प्रत्येक मतदाता का कर्त्तव्य है कि वह मतदान धर्म व कर्म समझकर करें।

पहले चरण के चुनाव में यह देखा गया है सभी पार्टियां भीतरी घात से प्रभावित है। एक व्यक्ति वर्षों तक अपनी पार्टी के नेताओं की सेवा करता रहा और जब उसका हक परिपक्व हुआ तो दूसरी पार्टी के व्यक्ति को जो पार्टी छोडकर आया है उसे टिकिट दे दिया जाता है। इन परिस्थितियों में भीतरी घात का होना स्वाभाविक ही माना जाना चाहिये। जब तक कोई व्यक्ति लगातार 5 वर्षों तक एक राजनैतिक पार्टी का सदस्य नहीं रहता उसे पार्टी चुनाव के हेतु टिकिट न दिया जावे। '**आया राम गया राम**' का सिद्धान्त नैतिक नहीं है।

मतदान का अधिकार संवैधानिक अधिकार है अत: न तो यह बेचा जा सकता है न खरीदा ही जा सकता है। संविधान के अनुसार मतदाता और चुनाव में खडा होने वाला वही व्यक्ति होना चाहिये जो संविधान के अनुच्छेद 51क के तहत् अपने मूल कर्त्तव्यों की पालना कर रहा हो। देश की संसद का समस्त कार्य संविधान के अनुसार होना चाहिये, अत: आवश्यक है वह संविधान की जानकारी रखने वाला हो। वह कानून बनाता है, अतएव वह पढ़ा-लिखा होना चाहिये। यह सुझाव कई बार दिया जा चुका है कि सांसद/विधायक बनने के लिये ग्रेजूयेट होना कानून में आवश्यक किया जावे। जो व्यक्ति अुनच्छेद 51क के कर्त्तव्यों की पालना करने में बार-बार चूक कर रहा हो उसे चुनाव में खडा होने के योग्य नहीं माना जावे।

हमारा चुनाव का कानून The Representation of People Act, 1951 बहुत पुराना हो चुका है। समय के साथ वह पिछड़ चुका है। उसमें बहुत सुधारों की आवश्यकता है। अत: सम्पूर्ण रूप से नया कानून लाना आवश्यक हो गया है। नया कानून शीघ्र से शीघ्र लाया जावे। संविधान में भी इस हेतु आवश्यक संशोधन हों। चुनावों में राजनीतिक पार्टियों को चंदा कहां से और कैसे प्राप्त हो यह पारदर्शी होना चाहिये। उम्मीदवार अधिक से अधिक कितना खर्चा चुनाव पर खर्च कर सकता है, इसकी सीमा निर्धारित होनी चाहिये और पालना आवश्यक हो। देश में संसद व विधान सभा, नगरपालिका अथवा पंचायत के चुनाव एक साथ हो, विकासशील देश के लिये एक देश एक चुनाव आवश्यक है। सन् 1952 से प्रारम्भ होने वाले चुनावों का स्तर धीरे-धीरे गिरता जा रहा है। नेताओं की जबान विषैली हो गई है यह सच है संविधान ने हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है, किन्तु जिस भाषा का हम चुनावों में प्रयोग कर रहे हैं वह उस देश की भाषा नहीं हो सकती, जिस देश में गंगा बहती है।

प्रश्न लेख में यही उठाया गया था कि प्रथम चरण के चुनाव में मतदान औसत से कम क्यों हुआ? इसका सीधा, सरल व उचित उत्तर है भारतीय जनता पार्टी के नेताओं व कार्यकर्ताओं का जीत के प्रति अति उत्साहित होना कि हमारी जीत तो निश्चित है। कांग्रेस के नेताओं व कार्यकर्ताओं में निराशा की भावना व्याप्त होना कि वे तो हारेंगे ही फिर मेहनत क्यों की जावे? परिणाम यह हुआ कि मतदाता जिस संख्या में मतदान करते वे पोलिंग बूथ तक पहुंच ही नहीं सके। मतदान कम हुआ। मतदान में कमी लोकतंत्र में विश्वास की कमी को प्रदर्शित नहीं करता। मतदान का सिद्धान्त है कि सत्ता बरकरार रहने के माहौल के कारण मतदान में कमी आती है और बदलाव के लिये ज्यादा मतदान होता है।

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

पक्षीघर बनाने वाले-नेमीचंद चौपड़ा

पक्षियों के लिए आवास और दाना-पानी जुटाने की पहल

डॉ. अरुणा व्यास

यह समय पक्षियों के लिए संकट का है। खासकर से गौरैया के लिए। तेजी से बदलते शहर और वहां बनने वाले आवास अब घरेलू गौरैया के लिए उपयुक्त नहीं रह गए हैं। गौरैया मानव के लिए बेहद लाभकारी है। पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने और घातक कीटों को खाकर अपना जीवन यापन करने वाले इस पक्षी के नहीं रहने का अर्थ है, मानव सभ्यता पर ही संकट। असल में अब जो घर बन रहे हैं, वह इस तरह से बन रहे हैं कि वहां गौरैया के घोंसले के लिए जगह नहीं होती। माइक्रोवेव टावरों और कीटनाशकों के कारण होने वाले प्रदूषण से घरेलू गौरैया की पूरी की पूरी प्रजाति संकट में है। गौरैया ही क्यों दूसरे पक्षी भी अब बहुत कम दिखने को मिलते हैं। सोचिए, ऐसा ही यदि होता रहा तो आने वाले समय में पक्षियों के बगैर ही हमें रहना होगा और इसका अर्थ है, स्वयं हमारे ही अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह!

हमारी संस्कृति में कहा गया है पक्षियों को दाना-पानी देने से भविष्य के अनिष्ट से स्वयमेव छुटकारा मिल जाता है। यह भी कि हजार मनुष्यों के बजाए हजार मूक जीवों को भोजन कराना अधिक पुण्य का कार्य है। यह समय भीषण गर्मी का है, गौरैया और दूसरे पक्षियों के लिए दाना-पानी की बड़ी समस्या इस समय रहती है। इस दृष्टि से पाली में बहुत महती काम किया है, समाजसेवी नेमीचंद चौपड़ा ने। नेमीचंद चौपड़ा मूलत: व्यवसायी हैं परन्तु पिछले एक दशक से पक्षियों को बचाने की मुहिम में लगे हैं। उनकी इस मुहिम का आधार है, पक्षियों के लिए घर बनाकर उन्हें बसाना। आरंभ में गौरैया को बचाने के लिए उन्होंने ऐसा किया पर अब वह जो घर पक्षियों के लिए बनाते हैं, उनमें सब-तरह के पक्षी, कबूतर अपना आवास करते हैं और वहीं दाना-पानी की उनकी पूर्ति भी हो जाती है। नेमीचंद चौपड़ा ने पाली में विशेष रूप से पक्षी-घर बनाए हैं। आमतौर पर पक्षियों के लिए पेड़ ही बसेरा होता है। गौरैया के लिए लोगों के घर भी बसेरा होते हैं परन्तु बदलती जीवन शैली में गौरैया को घर कौन दे? कौन उसे अपने यहां घोंसला बनाने दे? इसलिए उनके यह घर भी अब दूर की सोच हो गए हैं। और फिर जैसे-जैसे कंक्रीट के जंगल में यह सारा संसार तब्दील होता जा रहा है, पक्षियों और जानवरों के लिए रहने के ठिकाने छीनते जा रहे हैं।

पक्षी कहां जाए? कैसे उनको भोजन मिले? कैसे वे श्वान और दूसरे जानवरों के शिकार होने से बचे रहें? इन्ही प्रश्नों से जूझते भामाशाह नेमीचंद चोपड़ा ने पक्षियों के लिए घर बनाने के विचार को मूर्त रूप दिया। पक्षी प्राय: तिनका-तिनका एकत्र किए अपने घोषलों में ही रहना पसंद करते हैं, पर शहरों में इमारतों के फैलते जंगल में तिनके कहां से आए? इसी सोच से नेमीचंद चौपड़ा ने पक्षियों के रहने के लिए ही बहुमंजिला आवास की पहल की। इसके लिए बाकायदा पक्षियों के लिए मौसम की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए घोंसला रूपी निर्माण कार्य आरंभ किया गया। पाली में

पक्षियों के लिए बहुत सुंदर घर बने हैं। बहुमंजिला इमारतों में मनुष्य नीं पक्षी अपनी मर्जी से रहते हैं। पाली जाएंगे तो आपको नेमीचंद चौपड़ा के बनाए पक्षियों के लिए अनूठे ठिकाने देखने को मिलेंगे। यहां पक्षी घोंसलों के बजाय हमारी ही तरह फ्लैट में रहते हैं, वो भी हजारों की तादाद में। इन मूक परिंदों के लिए ऐसे फ्लैट बनवाए गए हैं, जिनमें गर्मी के तेज ताप भी बेअसर है। बाकायदा इसके लिए गुजरात के कारीगरों को बुलाकार कार्य किया गया। गुजरात की मोरबी टाइल्स से इनका निर्माण किया गया है। यह गर्मी में ठंडी और सर्दी में गर्म रहती है। माने वातानुकूल हैं। नेमीचंद चौपड़ा बताते हैं, इसके लिए गुजरात गया था। वहां देखा 12 फूट का पक्षीघर किसी ने बनाया था। मैंने यह जो पाली में बनाया है वह 72 फूट का है। यहां तूफान आया पर कुछ नहीं हुआ। इस पक्षीघर में करीब 3000 पक्षियों के घोंसले हैं, जो देखने में भी काफी सुंदर लगते है। नेमीचंद चौपड़ा ने पाली ही नहीं, जिले के दूसरे गांव-कस्बों में भी ऐसे ही फ्लैट पक्षियों के लिए बनवाए हैं। उद्देश्य यही है कि पक्षी सुकून से वहां रह सके। पाली शहर के तीन ओर से पानी से घिरे लाखोटिया उद्यान में उन्होंने आरंभ में ऐसे ही दो पक्षीघर बनाए हैं। शहरवासी यहां उद्यान में घूमने आते हैं और पक्षियों के लिए दाना-पानी डालते हैं। इससे पक्षियों को फ्लैट से बाहर आने तक की जरूरत नहीं होती है। इससे पक्षियों के मरने के आंकड़ों में भी कमी आयी है। पक्षियों के अपने घर है। इसलिए उन्हें श्वान का डर नहीं है। इतनी ऊंचाई पर है कि वहां श्वान पहुंच नहीं सकते। बरसात व अंधड़ के समय भी पक्षी सुरक्षित रहते हैं। नेमीचंद चौपड़ा ने पाली के साथ ही सोजतरोड, निमाज और जैतारण सहित अन्य इलाकों में भी पक्षियों के लिए ऐसे ही पक्के पक्षीघर बनवाए हैं। नेमीचंद उदार व्यवसायी हैं। पक्षीघर के बाद अब शहर में तोता घर का निर्माण करवाने का भी उनका विचार है। वह कहते हैं, तोतों के लिए अलग से पक्के घर का निर्माण करवाया जाएगा। इनकी रूपरेखा तैयार कर ली गई है। पाली हाइवे पर नेमीचंद चौपड़ा ने प्रख्यात संत रूप मुनि जी की स्मृति में भव्य जैन मंदिर और साधु-संतों के समागम के लिए विश्राम गृह का निर्माण भी किया है। वह चाहते हैं, श्रमण संस्कृति के आलोक में जैन धर्म से जुड़े इतिहास और संस्कृति का एक विशाल पुस्तकालय भी रूप-मुनि की स्मृति में स्थापित करें। इसके लिए भी उन्होंने सुनियोजित कार्य योजना के तहत पहल की है। उद्देश्य यही है कि इस पुस्तकालय के साथ जैन धर्म से जुड़ी भारतीय संस्कृति के मौलिक शोध और अनुसंधान को गति दी जा सके।

डॉ. अरुणा व्यास,
पत्रकार एवं लोक-संस्कृति मर्मज्ञ

अधूरा सड़क निर्माण ग्रामीणों के लिये परेशानी का सबब बना

पावटा, (निसं)। अधूरा सड़क निर्माण कार्य ग्रामीणों के लिये परेशानी का कारण बना हुआ है। इस समस्या का समाधान नहीं होने पर ग्रामीणों ने आंदोलन की चेतावनी दी है।

जानकारी के अनुसार विराटनगर विधानसभा क्षेत्र में पावटा से कुनेड तक 2.5 करोड़ की लागत से 2 किमी. लंबी व 30 फुट चौड़ी सड़क प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत बननी थी। इसकी टेंडर प्रक्रिया पूरी होने के बाद ठेकेदार ने इस पर करीब एक महिने देर से काम शुरु कर दिया था और लगभग सड़क निर्माण के तहत मोहरम डालकर सीसी के लिए पक्का भी कर दिया गया लेकिन पावटा, कुनेड, भोनावास सहित दर्जनभर गांवों व ढाणियों को जोड़ती सड़क का नवीनीकरण कार्य अधूरा पड़ा है। ग्रामीणों ने बताया कि पीडब्ल्यूडी विभाग और ठेकेदार की सड़क निर्माण को लेकर लापरवाही है। यहां दो किलोमीटर तक सड़क नवीनीकरण

पावटा से कुनेड तक सड़क का नवीनीकरण कार्य अधूरा पड़ा है।

कार्य पिछले कई महिनों से अधूरा पड़ा है। पुरानी डामरीकरण सड़क को उधेड़कर छोड़ने से आवागमन में लोगों को भारी परेशानी हो रही है। आए दिन हादसों की आशंका बनी रहती है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सड़क सुदढ़ीकरण कार्य प्रारंभ 16 जुलाई 2023 को होना था व कार्य समाप्ति की अवधि 16 दिसंबर 2023 को पूरी हो गई। इसके काफी समय बाद ठेकेदार ने सड़क का निर्माण कार्य चालू किया है। जिसके चलते आए दिन सड़क हादसे हो रहे हैं और वाहन चालकों के लिए खुदी सड़क परेशानी का सबब बनती जा रही है। सड़क कार्य के कछुआ चाल को लेकर लोगों में गहरा आक्रोश है।

वहीं हंसराज टेलर, पुनीत लुथरा,

> ■ **समस्या समाधान नहीं होने पर ग्रामीणों ने आंदोलन की चेतावनी दी**

धर्मेंद्र शर्मा, सुशील गौड़, जितेंद्र वर्मा, रामचंद्र, विजय, दीपक सहित ग्रामीणों ने बताया कि उक्त सड़क कार्य स्वीकृत करवाया गया जिससे लोगों को राहत मिल सके, लेकिन अधिकारियों की अनदेखी के चलते यह रोड आम जनता के लिए आफत बन गई है। ढाई माह से अधिक समय बीतने के बाद भी कार्य अधूरा पड़ा है। जिसके चलते उक्त मार्ग लोगों के लिए आफत बन चुका है। ऐसे में लोगों को सरकार की जन कल्याणकारी योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। वहीं ग्रामीणों द्वारा अधिकारियों से लेकर जनप्रतिनिधियों को अवगत करवाने के बाद भी समस्या का समाधान नहीं हुआ है, इसलिए ग्रामीणों ने आंदोलन की चेतावनी दी है।

मजदूर पिता के बेटे ने यू.पी.एस.सी. परीक्षा पास की

बीकानेर, (निसं)। मजदूर के बेटे ने 10 साल की अथक मेहनत और लगन के बाद देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक यूपीएससी में सफलता हासिल कर न सिर्फ अपने गांव और समाज का नाम रोशन किया है, बल्कि अपने पिता को भी धूप में झुलसने से राहत दिलाई है।

बीकानेर निवासी अशोक सोनी ने यूपीएससी में चयन के बाद अपने पिता को बताया कि उसका यूपीएससी परीक्षा में चयन हुआ है, पिता उस समय मजदूरी कर रहे थे। बेटे ने कहा कि पापा, आपके बेटे का चयन यूपीएससी में हो गया है। ऐसे में मजदूर पिता को इस बात की जानकारी नहीं थी कि बेटा किस परीक्षा में चयन की बात कर रहा है। उन्होंने कहा, बेटा, मैं अभी सीमेंट मिला रहा हूं, बाद में बात करना। कुछ ऐसा ही है अशोक सोनी के परिवार के साथ, जिनका हाल ही में यूपीएससी में चयन हुआ है। सोनी ने परीक्षा में 793वीं रैंक प्राप्त की, उन्हें अपने पांचवें प्रयास में सफलता मिली। अशोक सोनी जो इन दिनों दिल्ली में रह रहे हैं। उनके पिता बीकानेर में अपने पैतृक गांव में एक मजदूर के रूप में काम करते हैं। इसी बीच जब बेटे ने अपने पिता को फोन किया तो पिता ने कहा कि मैं अभी सीमेंट मिला रहा हूं, बाद में बात करना। इसी बीच अशोक का जवाब आया कि "पापा थारो छोरो आईएएस बांग्यो है"।

अशोक ने बताया कि वह पिछले 10 साल से तैयारी कर रहा है। अब उनका चयन हुआ है। हालांकि, अभी यह तय नहीं है कि उन्हें कौन सा कैडर मिलने वाला है। लेकिन वह अपने पिता सीताराम और मां सरला की जीवन परिस्थितियों को जरूर बदल देंगे। अशोक का कहना है कि उन्होंने 2013 से 2023 तक हुई सभी परीक्षाओं के पेपर इकट्ठा किए और उसके आधार पर तैयारी शुरू की और अब उन्हें यह सफलता मिली है। अशोक बताते हैं कि परिवार को अधिक से अधिक खुशियां देने के लिए जीवन में हमेशा कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

राशिफल शुक्रवार 26 अप्रेल, 2024

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2081, अनुप्रभा नक्षत्र रात्रि 3:40 तक, वारियान योग रात्रि 4:14 तक, गर करण प्रात: 7:47 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से रात्रि 3:40 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 3:40 तक रहेगा। भद्रा रात्रि 8:3 से आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:33 तक, लाभ-अमृत 7:33 से 10:48 तक, शुभ 12:25 से 2:02 तक, चर 5:56 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:56, सूर्यास्त 6:53

मेष
पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। आवश्यक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

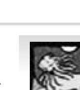

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी अनबन हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

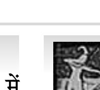

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। शुभ-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। मन में असंतोष बना रहेगा।

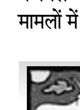

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। पारिवारिक/व्यक्तिगत कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

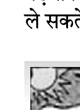

मकर
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

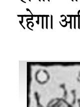

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

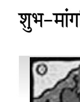

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।